Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LV (55), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

कुँअर बेचैन की कविताओं में मानवीय संवेदना

प्रीति रामरतन नागौर*

* शहीद भीमानायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़वानी (म.प्र.) भारत

शोध सारांश –हिन्दी साहित्य में डॉ. कुँअर बेचैन का काव्य–साहित्य मानवीय जीवन की विविध अनुभूतियों, संघर्षों और संवेदनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति के लिए विशिष्ट स्थान रखता है। उनकी कविताओं में व्यक्ति और समाज के पारस्परिक संबंधों के साथ–साथ प्रेम, करूणा, पीड़ा, संघर्ष, आशा, निराशा, सामाजिक विशमता, शोषण,विसंगति तथा मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी चिंता दिखाई देती है। कवि ने अपने समय के सामाजिक एवं समसामयिक जीवन को संवेदनशील दृष्टि से देखा और मार्मिक काव्य–अभिव्यक्ति प्रदान की है।

प्रस्तावना – कविता एक अनूठी और अभिव्यंजक कला है, जिसका प्रयोग सदियों से भावनाओं, विचारों और भावों को व्यक्त करने के लिये किया जाता रहा है। यह साहित्य का एक ऐसा रूप है, जो अर्थों को उद्घाटित करने के लिए भाषाके सौंदर्यपरक गुणों का प्रयोग करता है।

कविता का अंग्रेजी अर्थ 'पोएट्री' है। पोएट्री शब्द ग्रीफ शब्द 'पोएसिस' से आया है, जिसका अर्थ है– निर्माण।कविता किसी कवि द्वारा रचित कविता का एक विशिष्ट उदाहरण होती है और कवि एक विशिष्ट तुकांत योजना और लयबद्ध संरचना बनाने के लिए। विभिन्न तकनीकों जैसे कि स्वर–अनुप्रास, श्रुतिमधुरता और कर्कशता का प्रयोग करते है। ये तत्व मिलकर सरल शब्दों को मानवीय अनुभवों की प्रभावशाली अभिव्यक्तियों में बदल देते हैं।

'कविता के संबंध में कुँअर बेचैन के विचार–मेरी निष्ठा ने बार–बार मुझे यह ही बताया है कि कविता भावनाओं को हथेलियों पर जलते हुए दीपकों की अग्नि गाथा है, स्फूर्तिमयी मोहक सुगंध है, वर्तिका का ज्योति के प्रति किया गया पावन उत्सर्ग है। इसीलिए यह भी मानता है कि कवि की रचना–प्रक्रिया आँधियों द्वारा बुझाए गए दीपक की उस मनस्थिति का नाम है, जो उसे भीतर ही भीतर कहीं आंदोलित करती रहती है। इस आंदोलन की रगड़ में कहीं कोई चिंगारी भी चमक उठती है। इसी चिंगारी का दूसरा नाम कविता है।'(1)

सामाजिक पक्ष – कविताओं में सामाजिक संवेदना का मतलब है, कविताओं के माध्यम से समाज की समस्याओं, पीड़ाओं और परिस्थितियों को व्यक्त करना। यह एक ऐसा तरीका है, जिससे कवि समाज में जागरूकता फैलाते हैं। अन्याय के खिलाफ आवाज उठाते हैं और सामाजिक परिवर्तन लाने की कोषिष करते हैं।

समाज में आज भी अमीर–गरीब में भेदभाव कियाजाता है। अपने ही अपनों के दुष्मन बनते जा रहे हैं। अमीर व्यक्ति गरीब की गरीबी का फायदा उठाकर उसे और गरीबी के दल–दल में धकेल देता है। समाज में अपने ही अपनों से ईष्या करते हैं और उनके भोलेपन का फायदा उठाते हैं। समाज की इसी सामाजिक दशा का बेचैन जी ने अपनी कविता में कुछ इस तरह से दर्शाया है –

'तुमने इस अंधेरी रात में
मुझे फिर धकेल दिया
सड़क पर चलते हुए आदमियों के जंगल में'(2)

इस स्वार्थी समाज में दूसरों को कष्ट देना तो एक लत सी हो गई है। एक व्यक्ति अपने ही घर–परिवार के सदस्यों को भी दु:ख, तकलिफ देने में पीछे नहीं हटता, तो समाज के दूसरे व्यक्ति उनके आगे फिके से लगते हैं, किन्तु अगर वही दु:ख, तकलिफ खुद को हो, तो उनके लिये ये सहन करना भारी हो जाता है, वे आत्महत्या जैसे अपराध को भी करने से नहीं चुकते। समाज में ऐसे ही द्वेष भावनायुक्त और स्वार्थी व्यक्तियों को दर्शाते का प्रयास बेचैन जी ने अपनी कविता में किया है –

'बहुत आसान है
पत्थर को फेंका जाना
किसीझील पर
मगर
बड़ा कठिन होता है
फूल के भी प्रहार को सहन करना
अपने सीने पर'(3)

अपने झूठे वैभव और प्रतिष्ठा के घमंड में चूर व्यक्ति आपसी वैमनस्य और हृदयगत भ्रांतियों को मन से निकालने में असमर्थ व्यक्ति एक–दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप लगाते रहते हैं। बेचैन जी ने यहां 'आंगन की दीवार हटाना'हृदयगत भ्रांतियों का निराकरण करने का तथा 'एक–दूसरे पर दीवार की ईंटें फेंकना' आरोप–प्रत्यारोप का प्रतीक बनाते हुए सामाजिक संवेदना को व्यक्त किया है –

'उन्होंने
आंगन की दीवार को हटाया तो सही
मगर
एक–दूसरे पर
उसी दीवार की ईंटें फेंककर।'(4)

सांस्कृतिक पक्ष – भारतीय संस्कृति विष्व मानव इतिहास की अमूल्य निधि है। विश्व की कोई भी जाति या सम्प्रदाय इसके प्रभाव से अछुता नहीं

रहा और न ही कभी रहेगा। इसे तोड़ने के लिए अन्दर और बाहर दोनों ओर से प्रयत्न किये गये हैं, किन्तु भारतीय संस्कृति का कोई बाल भी बांका नहीं कर सका।

संस्कृति के सहारे मनुष्य अपने सामूहिक या सामाजिक जीवन व्यवस्था, आदर्शों एवं लक्ष्यों का निर्माण करता है। प्रत्येक समाज में संस्कृति का स्वरूप एक विशेष प्रकार का होता है। यह चेतना एक खास व्यक्ति की नहीं वरन् सम्पूर्ण समाज की सामूहिक होती है।

बेचैन जी का मानना है कि युगों से चली आ रही रूढ़ियां अब अपनी प्रासंगिकता खो चुकी है। ये रूढ़ियां आज के तेज भागती हुई जिन्दगी का साथ नहीं निभा सकती। रूढ़ियों के मोह के कारण व्यक्ति की प्रगति में भी व्यवधान होता है। जो बेचैन जी ने अपनी कविता की पंक्तियों में व्यक्त किया है –

'तेज चलती हुई रेलगाड़ी में
खिड़की के पास बैठे मुसाफिर द्वारा
लाइन के निकट खड़े हुए वृक्ष की पुष्ट कहानी को
कसकर पकड़ लेने की स्थिति।'(5)

वर्तमान में आधुनिकता के प्रभाव के कारण कही प्राचीन कुरीतियों और रूढ़ियों के खिलाफ आन्दोलन जारी रहता है, तो कही धर्म और आस्था के नाम पर व्यक्ति में भय पैदाकर उन कुरीतियों और रूढ़ियों की बेड़ियों की पूरी कड़ियाँ न खोल एक–दो कड़ियों को खोल उन्हीं बेड़ियों में बंधे रहने के लिए विवश किया जाता है।

आज का समाज भले ही पाश्चात्यता के प्रभाव में पड़कर नई सोच की ओर आगे बड़ रहा है, किन्तु आज भी कई जगहों पर स्त्रियों को सत्य बोलने और असत्य के खिलाफ खड़े होने के लिए उनकी जीभ काटकर फेंक दी जाती है। इसी संस्कारवादी समाज में रूढ़िवादी सोच से उपजी संवेदना को बेचैन जी अपनी कविता में व्यक्त करते हुए कहते हैं कि –

'मैं गली के मोड़ पर खड़ा–खड़ा
बातों से ही
किसी के घर की सूचना
दे तो सकता था
लेकिन तुम शायद भूल गए हो
अभी कुछ दिन पहले तुमने मेरी जीभ काट दी थी।'(6)

समाज की रूढ़िवादी शक्तियां इतनी चालाक है कि अगर पंख कतरती नहींतो पंखों को इतना ऊपर खोलकर उनमें लंबे धागे बांध देती है कि उड़ना असम्भव हो जाए। इस सांस्कृतिक स्थिति का मर्म स्पर्शी चित्रण बेचैन जी ने किया है –

'तुम शायद नहीं जानते कि उड़ने के लिए
पंखों का ऊपर ही नहीं
नीचे गिरना भी जरूरी है।'(7)

कवि अपनी सम्पूर्ण चेतना और संवेदना के साथ बिना किसी बड़बोलेपन के मनुष्यों द्वारा ही रचे गए उत्पीड़क समाज के खिलाफ है। वस्तु एवं अभिव्यक्ति के सशक्त तालमेल से युक्त कविताएं पारम्परिक, धार्मिक, पौराणिक और रूढ़िवादी कल्पनाओं को विज्ञान की कसौटी पर कसने के पक्षधर है।

राजनीतिक पक्ष – 'भारत के प्रजातंत्र में राजनीति का हर व्यक्ति के जीवन में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। यह राजनीति चूल्हे से लेकर चौपाल से होती हुई चौराहों तक जाती है।घर, दफ्तर, कारखाना अथवा विद्यालय आज सब जगह राजनीति ही राजनीति छायी हुई है। फिर यह कैसे सम्भव हो सकता है कि आज का कवि इस राजनीतिक प्रभाव से अपने–आपको बचाये रखे। साहित्यकार, राजनीतिज्ञ नहीं होता है और न ही वह राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाता है, यह तो तटस्थ भाव से उसका सर्वेक्षण करता रहता है और यह परिस्थितियां जान–अनजाने उस पर निरन्तर प्रभाव डालती रहती है। यह प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उठता है।'(8)

राजनीति में भ्रष्टाचार, स्वार्थ, अनैतिकता और कई प्रवृत्तियां पनपी है। इसी वजह से भला आदमी राजनीति से दूर भागने लगा। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार ने शिष्टाचार का रूप धारण कर लोगों को ठगा है। आज राजनेताओं के ठांट–बांट किसी राजा से कम नहीं है। अपनी इसी विलासिताओं के कारण उन्हें आम आदमी के दु:ख, दर्द और उसकी पीड़ा से उसे मतलब नहीं रहता है।

आज सत्ताधारी के पास सारी सुख–सुविधाएँ होती हैं, फिर भी वह आम जनता का शोषण कर उनका शिकार एक भेड़िये की तरह करते हैं। आम–आदमी पायी–पायी जोड़कर अपनी और अपने परिवार की सुख–सुविधाओं की पूर्ति करता हैं, किन्तु उसे यह नहीं पता होता के उसके ऊपर सत्ताधारी भ्रष्ट राजनेता है, तो उसका जानवरों की तरह शिकार करने के लिए घात जमाए बैठा है। आम आदमी की इसी राजनीतिक संवेदना को बेचैन जी ने अपनी कविता में व्यक्त किया है –

'आज भी यह जो सारी सुविधाओं को
घेर–घेर कर इकट्ठा किया जा रहा है
जंगली जानवरों की तरह
यह भी इसलिए
जिससे कि बीच में बहुत ऊँचे चबूतरे पर बैठा हुआ बादषाह
उनका शिकार कर सके।'(9)

पूंजीवादी व्यवस्था के कारण समाज में ऊंच–नीच के भेदभाव पाए जाते हैं। वर्तमान समाज में बढ़ते हुए वर्ग भेद पर आधारित पक्षपात की ओर संकेत करते हुए बेचैन जी आज के भ्रष्ट नेताओं के दिखावे के समाजसेवियों पर व्यंग करते हुए कहते हैं कि –

'आसमान के सूरज की रोशनी
पहले ऊँचे भवनों पर उतरती है
और बहुत बाद में आती है कुटिया की छत तक।'(10)

बेचैन जी वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था पर और उसकी कुरीतियों पर करारी टिप्पणी करते हैं; जिस व्यवस्था में समयानुसार फेर बदल न किया जाएं, तो वह व्यवस्था व्यर्थ होती है। भ्रष्टाचार और अत्याचार को पनपने के अवसर देने वाली नीतियां ही आज 'राजनीति' बन गई है। यहां 'अंधेरे' को तमाम बुराईयों का तथा 'रोषनी' प्रगति और नीति का प्रतीक है –

'किन्तु
तुम ऐसा नहीं कर सकोगी शायद
क्योंकि तुम
तुम, वह वर्तमान व्यवस्था हो
जो अब भी
रोशनी से मुँह फेरे खड़ी है
और आँखें गड़ाए हुए है
उन अंधेरों में

जिन्हें पीठ के पीछे होना चाहिए था।'(11)

आज की राजनीति केवल स्वार्थ की राजनीति बनकर रह गई है। राजनीति के बढ़ते अपराधीकरण के कारण आज देश में हिंसा, लुटपाट, डकैती, अपहरण और बलात्कार जैसे अपराध दिन-प्रतिदिन निरन्तर बढ़ते जा रहे हैं।

आर्थिक पक्ष – कविता में आर्थिक संवेदना का अर्थ है कवि या समाज पर धन, गरीबी, भौतिकतावाद और पूंजीवाद के प्रभाव से जुड़ी भावनाओं, विचारों और अनुभवों को व्यक्त करता है। इसमें आर्थिक असमानता, धन के प्रति लालच, उपयोगितवाद और इसके कारण मानवीय मूल्यों में गिरावट जैसे मुद्दों को शामिल किया जाता है और यह आर्थिक बदलावों से उत्पन्न होने वाली मानवीय पीड़ा या बदलावों को भी दर्शा सकती है।

'भारतीय समाज में धन का असमान वितरण हो रहा है। एक ओर हमारे समाज में ऐसे लोग है जिनके कुत्ते भी घर और कार मेंघुमते हैं, दूसरी ओर ऐसे भी लोग हैं, जो दो वक्त की रोटी भी मुश्किल से जुटा पाते हैं। जिस प्रकार देश में अमीरी की कोई सीमा नहीं है। उसी प्रकार देश में गरीबी की भी कोई सीमा नहीं है। बड़े-बड़े पूंजीपति दिन-दहाड़े गरीबों को लूट रहे है। श्रम का पसीना माटी के मोल बिक रहा है।'(12)

देष में बढ़ती हुई निर्धनता और भूखमरी से कोई भी कवि या रचनाकार अनजान नहीं रह सकते। बेचैन जी कहते हैं कि सरकार द्धारा खोली गई राशन की दुकानें भी एक तरह से उन गरीबों को यातनाएं ही देती है। क्योंकि कहने मात्र के लिए राशन गरीबों के लिए आता है, किन्तु देश में बढ़ती हुई भ्रष्ट नीतियों द्धारा उस पर भी कुण्डली जमा ली जाती है और सुविधाएं गरीब और अपेक्षित व्यक्तियों तक नहीं पहुंच पाती। जो कविता की इन पंक्तियों में व्यक्त है –

'दिन
एक राशन की दुकान की तरह खुलता है
और मुंह-सबेरे से
पंक्ति में खड़े
पिचके पेटों की पसलियां
उभर आती है उसे देखकर'(13)

निष्कर्ष – आज की कविता जिस युग में रची जा रही है। वही जीवन मूल्यों के विघटन का युग है। पारिवारिक विघटन, आर्थिक असमानता, सांस्कृतिक अवमूल्यन और राजनीतिक अस्थिरता आदि सबने मिलकर इन प्राचीन जीवन मूल्यों को पीछे ढकेल दिया है। बेचैन जी जन-जन के कवि थे। उनकी भाषा और विषय वस्तु उनकी रचनाओं को लोकप्रिय बनाती है। जीवन संघर्ष और विसंगतियों की रगड़ से ही बार-बार निखर कर बेचैन जी उज्ज्वल हुए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. डॉ. सविता मिश्र –'डॉ. कुँअर बेचैन : सृजन के विविध आयाम,' पृ. 194
2. कुँअर बेचैन –'शब्द : एक लालटेन,' पृ. 33
3. कुँअर बेचैन–'नदी तुम रूक क्यों' गई, पृ. 27
4. कुँअर बेचैन –'शब्द : एक लालटेन,' पृ. 64
5. कुँअर बेचैन –'शब्द : एक लालटेन,' पृ. 15
6. कुँअर बेचैन –'शब्द : एक लालटेन,' पृ. 41
7. कुँअर बेचैन –'शब्द : एक लालटेन,' पृ. 42
8. डॉ. अभय खैरनार –'कुँअर बेचैन –की गजलें : संवेदना एवं शिल्प,' पृ. 108
9. कुँअर बेचैन –'शब्द :एक लालटेन,' पृ. 49
10. कुँअर बेचैन –'शब्द : एक लालटेन,' पृ. 51
11. कुँअर बेचैन –'शब्द : एक लालटेन,' पृ. 53
12. डॉ. अभय खैरनार–'कुँअर बेचैन की गजलें : संवेदना एवं शिल्प,' पृ. 122
13. कुँअर बेचैन –'शब्द : एक लालटेन,' पृ. 78

****